National Journal of Multidisciplinary Research and Development
ISSN: 2455-9040; Impact Factor: RJIF 5.22
www.nationaljournals.com
Volume 2; Issue 2; May 2017; Page No. 158-159

ऋक् संहिता के प्रतिपाद्य विषय

वागीश मिश्र

शोध छात्र, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

भारतीय मनीषा ने ज्ञान के क्षेत्र में जो कुछ भी अन्वेषण किया था, उसका सारतत्व ऋग्वेद में अनुस्यूत हो गया है। ऋग्वेद को विश्व की प्रथम लिखित कृति होने का गौरव प्राप्त है। ऋग्वेद को वैदिक वाङ्मय की सर्वाधिक प्राचीन सशक्त व महनीय कृति कहा जाता है। भारतीय विद्वानों ने इसकी महत्ता गूढ़ दार्शनिक विचारों की दृष्टि से सिद्ध की है। ऋक् का अर्थ है–स्तुतिपरक मंत्र, ऋग्वेद में मुख्यतः इन्हीं स्तुतिपरक मन्त्रों का संकलन है। परन्तु इन स्तुतिपरक मन्त्रों से इतर ऋग्वेद के अध्ययन से तत्कालीन समाज संस्कृति, भौगोलिक परिस्थितियों का भी ज्ञान होता है। ऋग्वेद में प्रतीक रूप में समस्त ज्ञान का स्रोत निहित है जिसका पल्लवन व पुष्पीकरण कालान्तर में रचित साहित्य में हुआ।

ऋग्वेद दस मण्डलों में विभक्त है। इन दस मण्डलों में 1028 सूक्त हैं, जिनकी संख्या भिन्न–भिन्न मण्डलों में भिन्न–भिन्न हैं। इन 1028 सूक्तों में लगभग 250 सूक्त इन्द्र को समर्पित हैं। इस प्रकार ऋग्वेद का लगभग चतुर्थांश इन्द्र से युक्त है। ऋग्वेद के मण्डलानुसार वर्ण्य विषय इस प्रकार है–

प्रथम मण्डल में अग्नि, इन्द्र, मरुत् व अश्विनों की स्तुति से सम्बन्धित सूक्त प्राप्त होते हैं। इन देवों की स्तुतियों के अतिरिक्त वायु, मित्रावरूणौ, विश्वेदेवाः, सविता, पूषा, वरुण, रुद्र देवों की भी स्तुति की गयी है।

द्वितीय मण्डल में अग्नि, इन्द्र, ब्रह्मणस्पति (वृहस्पति) के सूक्त प्रधानता से प्राप्त होते हैं। इनके अतिरिक्त विश्वेदेवाः मरुत्, राका, सिनीवाली, सरस्वती की भी स्तुतियाँ हैं।

तृतीय मण्डल में अग्नि, इन्द्र, यूप, इन्द्राग्नी, विश्वामित्र–नदी संवाद आदि विषय प्रतिपादित हैं।

चतुर्थ मण्डल में अग्नि, इन्द्र, रूद्र, श्येन, द्यावापृथिवी वायु आदि से सम्बन्धित सूक्त प्राप्त होते हैं।

पंचम मण्डल में अग्नि, इन्द्र, विश्वेदेवाः, अत्रि, मित्रावरूणौ, अश्विनौ, यर्जन्य, पृथिवी आदि के स्तुतिपरक मंत्र संकलित हैं।

षष्ठ मण्डल में अग्नि, इन्द्र, विश्वेदेवाः, गावः, उषा विषयक ऋचाएं प्राप्त होती हैं।

सप्तम मण्डल में अग्नि, इन्द्र, नदी, अश्विनौ, वरूण, सरस्वती, मण्डूकाः आदि देव स्तुतियाँ हैं।

अष्टम मण्डल में इन्द्र, अश्विनौ, अदिति, आदित्य मित्रावरूणौ, सुपर्ण आदि के स्तुति मन्त्र हैं।

नवम मण्डल मुख्यतः सोम देवता को समर्पित है। इसीलिये इसे पवमान मण्डल भी कहते हैं।

दशम् मण्डल में विविध दार्शनिक विषयों के साथ अनेक देवों की स्तुतियां की गयी हैं।

इन देव स्तुति युक्त वर्णनों के अतिरिक्त ऋग्वेद में समाज के विभिन्न पक्षों का चित्रण भी प्राप्त होता है।

यद्यपि ऋग्वेद का स्वरूप धार्मिक है, तथापि धार्मिक पक्षों से इतर सामाजिक दृष्टिकोण से अध्ययन करने पर तत्कालीन जीवन दर्शन, जीवन का लक्ष्य सदाचार, शिष्टाचार, सत्यासत्य का विवेचन आदि विषयों का भी ज्ञान होता है। तत्कालीन सामाजिक संरचना में वर्ण व्यवस्था का स्वरूप पुरुष[1] सूक्त में प्राप्त होता है।

ऐतिहासिकता की दृष्टि से भी ऋग्वेद अप्रतिम ज्ञान के स्रोत हैं। इनमें आर्यों का प्राचीन इतिहास, आर्य सभ्यता का विस्तार, तत्कालीन जातियों का विवरण, दाशराज्ञ युद्ध, विभिनन ऋषियों की वंश परम्परा का ज्ञान अनस्यूत है।

ऋक् संहिता में स्तुति के साथ ही साथ तत्कालिक भौगोलिक उच्चावचों का वर्णन भी प्राप्त होता है। आर्य क्षेत्रों के अधीन विभिन्न समुद्रों, नदियों, पर्वतों आदि का वर्णन है। ऋग्वेद में सप्तसिन्धु का उल्लेख अनेकशः हुआ है।[2] सायण ने सप्तसिन्धु के अन्तर्गत सिन्धु, वितस्ता, शुतुद्री, असिक्नी, परुष्णी, सरस्वती तथा कुम्भा नामक नदियाँ मानी हैं। ऋग्वेद के दशम मण्डल में नदियों का विशेष रूप से उल्लेख है। इस मण्डल में गंगा, यमुना, सरस्वती, तुष्टामा, सुसर्त, रसा, श्वेती, मेहत्नु, गोमती, व्रमु आदि नदियों का उल्लेख मिलता है।[3]

ऋग्वेद में रस, छन्द, अलंकार आदि काव्यशास्त्रीय तत्वों का समावेश है। अनुप्रास, यमक, रूपक आदि अलंकारों के सुन्दर प्रयोग ने भावी काव्यरचनाओं के लिये आदर्श प्रस्तुत किये हैं। उषा सूक्त में उषा को एक अत्यन्त सुन्दरी युवती व पत्नी के रूप में प्रस्तुत करके ऋषि ने श्रृङ्गार रस व उपमा अलंकार का सुन्दर प्रयोग किया है।[4] इसके अतिरिक्त एक स्थान पर उषा को एक सुन्दरी कन्या मानकर ऋषि कहता है कि सूर्य रूपी पति से मिलने के लिये उद्यत प्रेमिका प्रतीत होती है जो मुस्कुरा रही है तथा अनावृत वक्षस्थल वाली है।[5] इसी प्रकार के सुन्दर अलंकार प्रयोगों से ऋक् संहिता परिपूर्ण है।

विभिन्न देव स्तुतियों के माध्यम से मन्त्र दृष्टा ऋषियों का उद्देश्य मनुष्य के दार्शनिक प्रश्नों का समाधान करना था। इन्हीं प्रश्नों के क्रम में आत्मा क्या है? परमात्मा से उसका क्या सम्बन्ध है? जगत् की उत्पत्ति कैसे हुई? आदि प्रश्नों के समाधान का प्रयास तपः पूत ऋषियों ने विभिन्न सूक्तों में किया है।[6] ऋग्वेद में ऋत् को सत्य व अविनाशी तत्व के रूप में अभिहित किया गया है। यही सर्वप्रथम उत्पन्न होकर जगत् का कारण बना, जिसकी उत्पत्ति तप से हुई।[7] सृष्टि के विषय में बताया गया कि सर्वप्रथम हिरण्यगर्भ उत्पन्न हुआ जो कि समस्त प्राणियों का अधिपति हुआ। यही आकाश, पृथिवी व अन्तरिक्ष का धारणकर्ता है।[8]

उपसंहार

ऋग्वेद के विषयों का अध्ययन करने से स्पष्ट होता है कि यह ग्रन्थ मात्र स्तुति मन्त्रों का संग्रह ही नहीं है अपितु जीवन के व्यापक तत्वों को स्पर्श करता है। देवताओं की स्तुतियों से सम्बद्ध मन्त्रों में उच्चकोटि के काव्यीय तत्व समाविष्ट हुए हैं व कई सूक्त गूढ़ दार्शनिक तत्वों का विवेचन करते हैं। ऋक् संहिता में जीवन व समाज के प्रत्येक विषयों का विवेचन प्राप्त होता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः।
   उरुतदस्य यद्वैश्यः पदूभ्यां शूद्रो अजायत।।
   – ऋग्वेद–20/90/12

2. यो हत्वाहिमरिणात्सप्तसिन्धून्योगा– ऋग्वेद–2/12/3
3. इमंमेगङ्गेयमुनेसरस्वति शुतुद्रिस्तोयंसचतापरुष्णया।
   असिक्न्यामरूद्वृधे वितस्तयार्जीकीये शुणुह्यासुषोमया।।
   –ऋग्वेद–10/75/5
4. अवस्यूमेव चिन्वती मद्योन्युषायाति स्वसरस्य पत्नी।
   सर्वजनन्ती सुभगा सुदंसाआन्ताद्दिवः पप्रथ आपृथिव्याः।।
   –ऋग्वेद–3/61/4
5. कन्येवतान्वाऽऽशाशदानां एषि देवि देवमियक्षमाणम्
   संस्मय माना युवतिः पुरस्तादाविर्वक्षांसि कृणुषे विभाति।
   –ऋग्वेद–1/123/10
6. ऋग्वेद–10/121, 10/129, 10/90
7. ऋतं च सत्यं चाभीद्वात्त पसोऽध्यजायत्। –ऋग्वेद–10/190/1
8. हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
   स दाधार पृथिवी द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।।
   –ऋग्वेद–10/121/1